AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-7951

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस)

संध्या यादव
सहायक प्रोफेसर
मंगलमय इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
&
अनिल कुमार बाजपेयी
एच. एल.एम. कॉलेज
ग़ाज़ियाबाद, ग्रेटर नोएडा

सार: भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए आगे के शोध को समर्थन और सुविधा प्रदान करना है। IKS वैदिक साहित्य, वेदों और उपनिषदों पर आधारित है। मौजूदा IKS पाठ्यक्रमों को डिजिटल लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म से सिंक किया जा सकता है। IKS पाठ्यक्रमों पर कक्षा वितरण की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास के लिए मॉड्यूल तैयार किए जा सकते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियों से संबंधित विशिष्ट विषयों पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएंगे। ग्रैंड नेशनल चैलेंज, राष्ट्रीय प्रतियोगिता, हैकथॉन और नवाचार को प्रोत्साहित करने के माध्यम से IKS में नवाचार को बढ़ावा दिया जाएगा। भारत-केंद्रित शोध करने के लिए भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) जैसे संस्थानों के माध्यम से संस्थान वैश्विक सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में IKS केंद्रों की स्थापना के लिए प्रारंभिक बीज निधि प्रदान की जाएगी। सूचित और आत्मविश्वासी नागरिक विकसित करने के लिए प्रामाणिक IKS ज्ञान का प्रसार और लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न तंत्रों के माध्यम से जनता से संपर्क किया जाएगा। नागरिक विज्ञान पहलों के समान जनभागीदारी कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को विभिन्न IKS पहलों में शामिल किया जाएगा। कौशल-आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए जाएंगे। आईकेएस भारतीय विरासत को भारतीयों और दुनिया के सामने प्रदर्शित करने के लिए प्रौद्योगिकी समाधान लाकर विरासत प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देगा। इसका उद्देश्य विश्व पर्यटन के 10% हिस्से पर कब्ज़ा करना और हमारे युवाओं को बड़े पैमाने पर रोज़गार के अवसर प्रदान करना है।

कीवर्ड: भारतीय ज्ञान प्रणाली, आईकेएस, कौशल-आधारित कार्यक्रम, रोजगार के अवसर, एनईपी 2020, वैदिक साहित्य, उपनिषद, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण

परिचय: भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान का व्यवस्थित संचरण है। यह एक परंपरा के बजाय एक संरचित प्रणाली और ज्ञान हस्तांतरण प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली वैदिक साहित्य, उपनिषदों, वेदों और उपवेदों पर आधारित है। NEP-2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार की इस समृद्ध विरासत को मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में मान्यता देती है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल हैं जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुए हैं। मान्य करने और व्यवहार में लाने की इस परंपरा ने हमारी शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य को प्रभावित किया है इसमें प्राचीन भारत का ज्ञान, उसकी सफलताएं और चुनौतियां, तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की समझ शामिल है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्देश्य: भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास जैसे कई क्षेत्रों में समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए आगे के शोध को समर्थन और सुविधा प्रदान करना है। अतीत से आकर्षित होने और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को एकीकृत करने का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान हस्तांतरण और अद्वितीय दृष्टिकोण (भारतीय दृष्टि) की अखंड परंपरा द्वारा प्रतिनिधित्व की गई हमारी प्राचीन ज्ञान प्रणालियों का उपयोग करके भारत और दुनिया की समकालीन और उभरती समस्याओं को हल करना है।

आईकेएस प्रकोष्ठ: भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) शिक्षा मंत्रालय (एमओई) के तहत एआईसीटीई, नई दिल्ली में एक अभिनव प्रकोष्ठ है। यह आईकेएस के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए आईकेएस को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए स्थापित किया गया है। यह कला और साहित्य, कृषि, मूल विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में हमारे देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान को फैलाने के लिए सक्रिय रूप से संलग्न होगा। आईकेएस प्रभाग के कार्य: आईकेएस प्रभाग का मुख्य कार्य भारत और विदेशों में विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों, अनुसंधान और

विकास प्रयोगशालाओं और विभिन्न मंत्रालयों सहित विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए आईकेएस आधारित/संबंधित अंतर और पार अनुशासनिक कार्यों को सुविधाजनक बनाना और समन्वय करना है और निजी क्षेत्र के संगठनों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करना है। दूसरा कार्य संस्थानों, केंद्रों और व्यक्तियों के शोधकर्ताओं से मिलकर विषयवार अंतःविषय अनुसंधान समूहों की स्थापना, मार्गदर्शन और निगरानी करना है। साथ ही, लोकप्रियकरण योजनाओं को बनाना और बढ़ावा देना, विभिन्न परियोजनाओं के वित्तपोषण को सुविधाजनक बनाना और अनुसंधान करने के लिए तंत्र विकसित करना और आईकेएस के प्रचार के लिए जहां भी आवश्यक हो नीति सिफारिशें करना।

आईकेएस प्रकोष्ठ: भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) शिक्षा मंत्रालय (एमओई) के तहत एआईसीटीई, नई दिल्ली में एक अभिनव प्रकोष्ठ है। यह आईकेएस के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए आईकेएस को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए स्थापित किया गया है। यह कला और साहित्य, कृषि, मूल विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में हमारे देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान को फैलाने के लिए सक्रिय रूप से संलग्न होगा। आईकेएस प्रभाग के कार्य: आईकेएस प्रभाग का मुख्य कार्य भारत और विदेशों में विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों, अनुसंधान और विकास प्रयोगशालाओं और विभिन्न मंत्रालयों सहित विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए आईकेएस आधारित/संबंधित अंतर और पार अनुशासनिक कार्यों को सुविधाजनक बनाना और समन्वय करना है और निजी क्षेत्र के संगठनों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करना है। दूसरा कार्य संस्थानों, केंद्रों और व्यक्तियों के शोधकर्ताओं से मिलकर विषयवार अंतःविषय अनुसंधान समूहों की स्थापना, मार्गदर्शन और निगरानी करना है। साथ ही, लोकप्रियकरण योजनाओं को बनाना और बढ़ावा देना, विभिन्न परियोजनाओं के वित्तपोषण को सुविधाजनक बनाना और अनुसंधान करने के लिए तंत्र विकसित करना और आईकेएस के प्रचार के लिए जहां भी आवश्यक हो नीति सिफारिशें करना।

विज़न: 'भारतीय ज्ञान प्रणालियों' के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देना, आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए 'भारतीय ज्ञान प्रणालियों' को संरक्षित और प्रसारित करना। मिशन:

1. कला, संगीत, नृत्य और नाटक से लेकर गणित, खगोल विज्ञान, विज्ञान, तकनीक, जीवन विज्ञान, पर्यावरण और प्राकृतिक विज्ञान, स्वास्थ्य देखभाल, योग, कानून, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, प्रबंधन, भाषा विज्ञान, भारत की मौखिक परंपराएं, संस्कृत, प्राकृत, तमिल, पाली आदि में छिपा ज्ञान तक प्राचीन और समकालीन समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणालियों के अनुसंधान, शिक्षण, प्रकाशन और संरक्षण के माध्यम से योगदान देने वाले व्यक्तियों और संगठनों का एक डेटाबेस बनाएं।

2. इस समृद्ध ज्ञान के अभिलेखीय और प्रसार के लिए पोर्टल बनाएं और एक खुला पोर्टल भी बनाएं और इसे पीपीपी मोड में विकी की तरह गतिशील और जीवंत रखें।

4. आईकेएस के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विद्वानों और संस्थानों और उनके कार्यों की पहचान करना और प्रमुख क्षेत्रों को वर्गीकृत करना।

5. आईकेएस में योगदान देने वाले सभी लोगों के काम की रिपोर्ट प्राप्त करना और नियमित प्रकाशन निकालना।

6. अवधारणाओं के प्रमाण, नए ज्ञान का सृजन, समाज के लिए उपयोगी प्रभावी अंतःविषयक कार्य प्रदान करने के लिए आईकेएस में अनुसंधान को बढ़ावा देना।

7. विजिटिंग प्रोफेसरों वैज्ञानिकों विद्वानों की शोध फेलोशिप या फेलोशिप बनाना: आईआईटी आई0आई0एसई0आर0/आई0आई0एम0/विश्वविद्यालयों में संस्कृत के प्रोफेसर और संस्कृत विश्वविद्यालयों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रोफेसर।

8. आईकेएस के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए अनुसंधान गतिविधियों, कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रकाशनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना। स्कूल और उच्च शिक्षा में पेश किए जाने वाले ज्ञान के आधुनिक विषयों की पाठ्य पुस्तकों और संदर्भ पुस्तकों में आईकेएस को एकीकृत करने के उपाय सुझाना।

10. शिक्षा मंत्रालय (एमओई) के अंतर्गत आने वाले संस्थानों, अन्य मंत्रालयों, विभागों, स्वतंत्र विद्वानों, गैर सरकारी संगठनों और आईकेएस के क्षेत्र में काम करने वाले निजी संस्थानों के बीच सहयोग/समन्वय

शुरू करना ताकि आधुनिक धाराओं और प्राचीन शास्त्रों से जुड़े अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सके।

11. जहाँ भी संभव हो, पीपीपी मॉडल की खोज करना और उसे अपनाना (जैसे कि विकी टाइप प्लेटफॉर्म और व्यापक आईकेएस पोर्टल बनाना)।

12. आईकेएस प्रभाग के उद्देश्यों की योजना बनाने, उन्हें क्रियान्वित करने और उनकी देखरेख करने के लिए विशेषज्ञ समूहों और समितियों का गठन करना।

13. आईकेएस के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कोई भी कदम, काम, परियोजना या गतिविधि शुरू करना।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत आने वाले विषय: मानविकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, सामुदायिक ज्ञान प्रणाली, ललित और प्रदर्शन कला, व्यावसायिक कौशल, आदि, जिनमें IKS की सामग्री है। दिशा-निर्देशों के अनुसार, पाठ्यक्रमों में IKS के पारंपरिक विषयों और रसायन विज्ञान, गणित, भौतिकी, कृषि आदि जैसे आधुनिक विषयों के बीच स्पष्ट मैपिंग होनी चाहिए। शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली: IKS को स्कूल और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में वैज्ञानिक तरीके से पेश किया जाएगा। IKS में आदिवासी ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ शामिल होंगी, जिनमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, खेल, साथ ही शासन, राजनीति और संरक्षण शामिल होंगे। आदिवासी नृजातीय-औषधीय प्रथाओं, वन प्रबंधन, पारंपरिक (जैविक) फसल की खेती, प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाएंगे। माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम भी उपलब्ध होगा। नीति यह मानती है कि भारत की समृद्ध विविधता का ज्ञान शिक्षार्थियों द्वारा सीधे आत्मसात किया जाना चाहिए। इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों के दौरे जैसी सरल गतिविधियाँ शामिल होंगी। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों के बारे में जानकारी के बारे में जागरूकता और प्रशंसा विकसित करने में भी मदद मिलेगी। **"एक भारत श्रेष्ठ भारत"** के तहत इस दिशा में, देश में 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी जहाँ शैक्षणिक संस्थान छात्रों को इन स्थलों और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए

भेजेंगे, ताकि इन क्षेत्रों के बारे में उनका ज्ञान बढ़ाया जा सके। वर्तमान में, मूल शोध, शिक्षा और IKS के प्रसार को उत्प्रेरित करने के लिए 32 IKS केंद्र स्थापित किए गए हैं। प्राचीन धातु विज्ञान, प्राचीन नगर नियोजन और जल संसाधन प्रबंधन, प्राचीन रसायन शास्त्र आदि जैसी 75 उच्च अंत अंतःविषय अनुसंधान सुविधाएँ चल रही हैं। IKS पर लगभग 5200 इंटर्नशिप की पेशकश की गई है। 50 संकाय विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए। 8000 से ज़्यादा उच्च शिक्षा संस्थानों ने अपने पाठ्यक्रम में IKS को अपनाना शुरू कर दिया है और 1.5 लाख पुस्तकों के डिजिटलीकरण पर काम किया है। IKS प्रभाग ने विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के अग्रणी विचारकों और अभ्यासियों को एक साथ लाकर विज़न 2047 विकसित किया है, जिसमें समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा की स्थापना के लिए एक रोडमैप तैयार किया गया है। हमारे विशाल ज्ञान का लाभ उठाकर, हमारे वर्तमान समय की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आगे के शोध को बढ़ावा देना और सक्षम बनाना आसान होगा। मुख्यधारा की शिक्षा में इन पाठ्यक्रमों को शामिल करने से हमारी शिक्षण प्रणालियों की विरासत को संरक्षित करते हुए प्रेरणा मिलेगी। पारंपरिक और समकालीन दोनों अवधारणाओं के संपर्क के माध्यम से, छात्र अपनी संस्कृति की बेहतर समझ हासिल कर सकते हैं, अपने बौद्धिक विकास का विस्तार कर सकते हैं और अपने आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं।

मंत्रालय और नियामक निकायों द्वारा दिशानिर्देश: एनईपी 2020 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, मंत्रालय, यूजीसी और एआईसीटीई और उच्च शिक्षा संस्थानों जैसे नियामक निकायों द्वारा गतिविधियां शुरू की गई हैं। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को शामिल करने के लिए दिशानिर्देश 13.06.2023 को जारी किए गए हैं: यह भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने पर जोर देता है, और शिक्षा के सभी स्तरों पर आईकेएस को पाठ्यक्रमों में एकीकृत करके भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) के प्रवाह में रुकावट को दूर करने का प्रयास करता है। यह निर्धारित करता है कि यूजी या पीजी कार्यक्रम में नामांकित प्रत्येक छात्र को आईकेएस में क्रेडिट पाठ्यक्रम लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जो कुल अनिवार्य क्रेडिट का कम से कम 5% हो (इच्छुक छात्रों को कुल अनिवार्य क्रेडिट का बड़ा हिस्सा लेने की अनुमति दी जा सकती है)। आईकेएस को आवंटित क्रेडिट का कम से कम 50% प्रमुख अनुशासन से संबंधित होना चाहिए आईकेएस पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षण का माध्यम कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) पर संकाय के प्रशिक्षण/अभिविन्यास के लिए दिशा-निर्देश 13.04.2023 को जारी किए गए हैं: यह संकायों को

आईकेएस के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने और प्रेरण कार्यक्रमों और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के माध्यम से अधिक जानने और अन्वेषण करने में रुचि को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है।

उच्च शिक्षण संस्थानों में कलाकारों/कारीगरों के पैनल के लिए दिशा-निर्देश 08.05.2023 को जारी किए गए हैं: कलाकारों और उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सहयोग बनाने के लिए, कला शिक्षा का एक प्रभावी ढांचा विकसित करने के लिए, नियमित आधार पर शिक्षण, अनुसंधान और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में कुशल कला गुरुओं को शामिल करना, जो पारंपरिक शिक्षा के साथ कलात्मक अनुभव को और अधिक उत्पादक और छात्रों के लिए फायदेमंद बनाने के लिए तालमेल बिठाएगा। भारतीय विरासत और संस्कृति पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए दिशा-निर्देश 08.05.2023 को जारी किए गए हैं: लोगों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से परिचित कराना और भारतीय विरासत और संस्कृति पर आधारित कई प्रवेश और निकास के साथ अल्पकालिक बहु-स्तरीय क्रेडिट आधारित मॉड्यूलर कार्यक्रम प्रदान करना। इसमें सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद, संस्कृत, भारतीय भाषाओं, भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित पवित्र धार्मिक क्षेत्रों, पुरातात्विक स्थलों और स्मारकों, भारत की विरासत, भारतीय साहित्य, भारतीय मूर्तिकला, भारतीय संगीत और नृत्य रूप, नाटक, दृश्य कला, प्रदर्शन कला, शिल्प और कारीगरी आदि के क्षेत्रों में सीखने के विभिन्न आयामों के ज्ञान का प्रसार और प्रदान करना शामिल है। आईकेएस ने आईकेएस में 18 से 20 क्रेडिट पूरा करने वाले छात्रों को मामूली डिग्री प्रदान करने का प्रावधान किया है।

अनिवार्य क्रेडिट घटक: विश्वविद्यालय पारंपरिक ज्ञान और गौरव के साथ सभी विषयों में शिक्षार्थियों को शामिल करने के लिए सभी पाठ्यक्रमों में शिक्षार्थी क्रेडिट या आईकेएस ऐच्छिक पेश कर सकते हैं। यूजीसी ने पहले ही आईकेएस पाठ्यक्रमों से संबंधित पाठ्यक्रम में कुल क्रेडिट का 5% शामिल करना अनिवार्य कर दिया है। एआईसीटीई ने इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए आईकेएस पाठ्यक्रम शुरू किया है। क्षेत्रीय पाठ्यक्रमों की डिजाइनिंग: राज्य/केंद्र शासित प्रदेश शिक्षार्थियों के लिए समर्पित पाठ्यक्रमों को तैयार करने के लिए अपनी-अपनी मूल संस्कृतियों, कलाओं, शिल्पों, परंपराओं, वास्तुकला, भोजन की आदतों, भाषाओं आदि का दस्तावेजीकरण कर सकते हैं। सहयोग का दायरा: भारत के वैश्वीकृत इतिहास को देखते हुए, विश्वविद्यालयों द्वारा डिजाइन किए गए बहु-विषयक पाठ्यक्रम जहाँ भी संभव हो, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग करने की गुंजाइश पर विचार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एनसीईआरटी स्कूल स्तर पर भारत और इंडोनेशिया के बीच ऐतिहासिक

संबंधों पर प्रकाश डालने वाले पाठ को शामिल करने का कार्य कर रहा है। भर्ती: विशेष आईकेएस संकाय और शोधकर्ताओं का एक कैडर बनाने के लिए यूजीसी-नेट के तहत परीक्षण के लिए प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम को एक विषय के रूप में लॉन्च किया जा सकता है। नियमित संकाय प्रशिक्षण: आईकेएस पाठ्यक्रमों पर कक्षा वितरण की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण के लिए मॉड्यूल तैयार किए जा सकते हैं। विशेष आईकेएस संकाय द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणालियों के विशेष विषयों में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष शिक्षक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना। सीखने के अवसर प्रदान करें: आईकेएस इंटर्नशिप - छात्र इंटर्नशिप/प्रशिक्षुता के लिए अवसर प्रदान करें और शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस प्रभाग द्वारा शुरू किए गए इंटर्नशिप कार्यक्रम, बीजीसंवाहन कार्यक्रम के साथ मिलकर आईकेएस शिक्षार्थियों को परामर्श प्रदान करें। व्यावहारिक कार्यशालाएं: छात्रों को विशेषज्ञों से व्यावहारिक कार्यशालाओं में विभिन्न कौशल सीखने के अवसर प्रदान करें

शैक्षिक सामग्री का अनुवाद: IKS केंद्रों द्वारा सभी विषयों के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है, ताकि विविध शिक्षार्थियों को शामिल किया जा सके और स्वदेशी पहचान को संरक्षित किया जा सके। IKS में अनुसंधान और नवाचार का समर्थन करें: प्राथमिकता अनुसंधान निधि - IKS से संबंधित अनुसंधान प्रस्तावों को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में NRF के माध्यम से समर्पित अनुसंधान अनुदान प्रस्तावित किए जा सकते हैं। ऐसे उत्प्रेरक अनुदान बनाएं जो IKS में मूल, गंभीर और गहन विद्वत्तापूर्ण अनुसंधान को प्रोत्साहित करें और भारत में IKS अनुसंधान को पुनर्जीवित करें। अंतःविषय IKS अनुसंधान में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए PMRF जैसी प्रतिष्ठित योजनाओं में IKS का परिचय दें। विभिन्न भव्य राष्ट्रीय चुनौतियों, राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं और हैकथॉन के माध्यम से IKS में नवाचार को बढ़ावा दें और नवाचार को प्रोत्साहित करें। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग - संस्थाएँ भारत-केंद्रित अनुसंधान करने के लिए भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) जैसे संस्थानों के माध्यम से वैश्विक सहयोग प्राप्त कर सकती हैं। विद्वानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और अगली पीढ़ी के विद्वानों का पोषण करने के लिए ASEAN फेलोशिप में IKS को एक विषय के रूप में शामिल करें।

संस्थागत सहायता तंत्र को निधि दें: IKS केंद्रों की स्थापना के माध्यम से संस्थागत सहायता तंत्र स्थापित करें जो देश के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधान, शिक्षा और आउटरीच गतिविधियों को शुरू करने

के लिए उत्प्रेरक होंगे। विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में IKS केंद्रों की स्थापना के लिए प्रारंभिक बीज निधि प्रदान करें। केंद्रित क्षेत्रों में वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने के लिए अतिरिक्त निधि प्रदान करें। जनभागीदारी को बढ़ावा दें: सूचित और आत्मविश्वासी नागरिकों को विकसित करने के लिए प्रामाणिक IKS ज्ञान का प्रसार और लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न तंत्रों (MyGOV प्रतियोगिताओं, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, रेडियो और टेलीविजन पर कार्यक्रम, सोशल मीडिया, आदि) के माध्यम से जनता तक पहुँचें। नागरिक विज्ञान पहलों के समान जनभागीदारी कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न IKS पहलों में लोगों को शामिल करें। रोजगार के अवसर पैदा करें: कई विशिष्ट IKS आधारित कौशलों के बीच IKS आधारित ब्यूटीशियन और कॉस्मेटोलॉजिस्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम, आयुर्वेद आधारित आहार विशेषज्ञ कार्यक्रम, गंधशास्त्र आधारित परफ्यूमरी जैसे कौशल आधारित IKS आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करें। भारतीयों और दुनिया को भारतीय विरासत दिखाने के लिए प्रौद्योगिकी समाधान लाकर विरासत प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दें। विश्व पर्यटन बाजार के 10% हिस्से पर कब्जा करने और युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर प्रदान करने का लक्ष्य

निष्कर्ष: IKS में प्राचीन भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों का ज्ञान, तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की भावना शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास जैसे कई क्षेत्रों में समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए आगे के शोध को समर्थन और सुविधा प्रदान करना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक अभिनव प्रकोष्ठ है जो IKS के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए IKS को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए स्थापित किया गया है। यह हमारे देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान को फैलाने के लिए सक्रिय रूप से संलग्न होगा। IKS में आदिवासी ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ शामिल होंगी, जिसमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, खेल, साथ ही शासन, राजनीति और संरक्षण शामिल होंगे। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों के ज्ञान के बारे में जागरूकता और प्रशंसा विकसित करने में भी मदद मिलेगी। इसमें सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद, संस्कृत, भारतीय भाषाओं, भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित पवित्र धार्मिक क्षेत्रों,

पुरातात्विक स्थलों और स्मारकों, भारत की विरासत, भारतीय साहित्य, भारतीय मूर्तिकला, भारतीय संगीत और नृत्य रूपों, नाटक, दृश्य कला, प्रदर्शन कला, शिल्प और शिल्प कौशल आदि के क्षेत्रों में सीखने के विभिन्न आयामों के ज्ञान का प्रसार और प्रदान करना शामिल है। विश्वविद्यालय पारंपरिक ज्ञान और गौरव के साथ सभी विषयों में शिक्षार्थियों को शामिल करने के लिए सभी पाठ्यक्रमों में शिक्षार्थी क्रेडिट या आईकेएस ऐच्छिक शुरू कर सकते हैं। यूजीसी ने पहले ही आईकेएस पाठ्यक्रमों से संबंधित पाठ्यक्रम में कुल क्रेडिट का 5% शामिल करना अनिवार्य कर दिया है। आईकेएस केंद्रों की स्थापना के माध्यम से संस्थागत समर्थन तंत्र स्थापित करें जो देश के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधान, शिक्षा और आउटरीच गतिविधियों को शुरू करने के लिए उत्प्रेरक होंगे।

संदर्भ:

1. भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ। https://www.sanskritimagazine.com/india/traditional-knowledge-systems-of-india/
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली खंड। https://iks.iitgn.ac.in/wp-content/uploads/2016/01/Indian-Knowledge-Systems-Kapil-Kapoor.pdf.
3. https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/how-colonial-india-destroyed-traditional-knowledge-systems/
4. https://iksindia.org/about.php.